इकाई 12 साम्राज्यों का गठनः असीरियन और बेबीलोनियन*

इकाई की रूपरेखा

12.1 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 बेबीलोनियन साम्राज्यः उदय और क्षेत्रीय विस्तार

12.4 असीरियन साम्राज्य

12.4.1 क्षेत्रीय विस्तार

12.4.2 प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था

12.5 असीरिया का विभाजन और बेबीलोनिया के साथ संघर्ष

12.6 समाज और अर्थव्यवस्था

12.6.1 सामाजिक-आर्थिक विशेषताएं

12.6.2 सांस्कृतिक विशेषताएं

12.7 सारांश

12.8 शब्दावली

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.10 संदर्भ ग्रंथ

12.11 शैक्षणिक वीडियो

12.1 उद्देश्य

पिछली इकाई में आपने मध्य और पश्चिमी एशिया के खानाबदोश समूहों के बारे में पढ़ा। यह इकाई बेबीलोनियन और असीरियन साम्राज्यों पर केंद्रित है। यहां आपका परिचय मेसोपोटामिया के क्षेत्र में साम्राज्यों के गठन से होगा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- बेबीलोनियन और असीरियन साम्राज्यों की स्थापना की प्रक्रिया को समझ सकेंगे,
- उन कारकों की पहचान कर सकेंगे जिन्होंने साम्राज्यों के विस्तार में सहायता की,
- साम्राज्यों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे,
- साम्राज्यों की सांस्कृतिक विशेषताओं को समझ सकेंगे, और
- साम्राज्यों की वृद्धि एवं विकास और उनके पतन के चरणों को समझ सकेंगे।

12.2 प्रस्तावना

लगभग 1800 बी सी ई से एक नई राजनैतिक संरचना स्वरूप में आई जिसे 'साम्राज्य' कहा जा सकता है। इस राजनैतिक संरचना की उत्पत्ति पश्चिमी एशिया में हुई। ये विस्तृत क्षेत्र

* डॉ. जीना जैकब, सेंटर फॉर हिस्टॉरिकल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

में फैली हुई थीं, और अधिकतर साम्राज्यों की प्रकृति राजतंत्रीय थी। इन राज्यों में सेना के संसाधनों की कमी नहीं थी तथा भेंटों के रूप में राज्य कार्य के लिए धन एकत्र करके साम्राज्य की केन्द्रीय सत्ता को भेजा जाता था। ये साम्राज्य कुलीन समूहों द्वारा चलाए जाते थे जो कि साम्राज्य के केंद्र में स्थित थे। केंद्र में राजधानी और उसके आस-पास के क्षेत्र शामिल थे हालांकि परिधीय प्रदेशों और अन्य स्थानों में रहने वाले लोग साम्राज्य की राजधानी से दूर थे, परन्तु वे भी सत्ताधारी वर्ग का हिस्सा थे, लेकिन सत्ताधारी वर्ग में बहुलता केन्द्र प्रदेशों से थी और उनके एक दूसरे से नातेदारी और रिश्तदारी के सम्बंध थे जो कि सजातीय या एक ही कबीले के होने के कारण थे।

भौगोलिक रूप से विस्तृत और सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से विविधता वाले प्रदेश, जो साम्राज्य का हिस्सा थे, में विभिन्न व्यवस्थाओं को एक जगह पर सही ढंग से व्यवस्थित करने की आवश्यकता थी। इसके लिए कर व्यवस्था, विस्तृत नौकरशाही ढांचा और स्थाई सेना व्यवस्थित की गई थी। न्याय व्यवस्था को साम्राज्य के सभी समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा करने की ज़रूरत थी जिनमें से सभी समाज में उन्नति के स्तर पर नहीं पहुँचे थे। साम्राज्य के विस्तृत होने के कारण कई प्रदेश जो केन्द्र क्षेत्र से बाहर थे उन्हें स्वयं आंतरिक समस्याओं को हल करने की शक्ति के साथ, जब तक वे नियमित रूप से भेंट जमा करते रहते थे तब तक उन प्रदेशों का शासन चलाने की अनुमति थी। कई बाहरी परिधीय क्षेत्र जो पूर्ण नियंत्रण में नहीं थे उन्हें बार-बार सैन्य हस्तक्षेप द्वारा सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता थी।

साम्राज्य की उत्पत्ति स्थाई सैन्य बल की ताकत पर विस्तारण की आवश्यकता से हुई थी। निरंतर विस्तार के द्वारा सत्ताधारी उच्च वर्ग ने शक्ति के द्वारा अपनी पद-प्रतिष्ठा को बनाकर रखा और अधिकतर विस्तृत प्रदेशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। उस समय परिस्थिति यह थी कि साम्राज्य जितना बढ़ता था उतने ही अधिक संसाधनों पर उसका नियंत्रण होता था। साम्राज्य के आकार और विस्तार के अनुसार ही उसे उतनी ही बड़ी स्थाई सेना की आवश्यकता थी। इतनी बड़ी सेना के रखरखाव के लिए बड़ी मात्रा में संसाधनों की आवश्यकता थी। इसलिए, साम्राज्य के विस्तार, भेंटरूपी शुल्क का संकलन और सेना के रखरखाव के बीच में एक मूलभूत कड़ी थी।

पश्चिम एशिया में साम्राज्य का निर्माण करने का प्रयास लगभग 1800 बी सी ई के आसपास हुआ था। मेसोपोटामिया में पहले बेबीलोनिया के लोगों ने साम्राज्य स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की। हिट्टियों ने उनका अनुसरण करते हुए इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। हिट्टियों के आक्रमणों ने अंततः बेबीलोनियाई साम्राज्य का अंत कर दिया। कई शताब्दियों और लम्बे समय तक चलने वाला बाद का असीरियन साम्राज्य यह सुनिश्चित करता है कि मेसोपोटामिया साम्राज्य उस क्षेत्र में विविध प्रकार के आरंभिक साम्राज्यों के लिए एक प्रतिरूप की तरह रहे।

12.3 बेबीलोनियन साम्राज्यः उदय और क्षेत्रीय विस्तार

बेबीलोन (बब-इलानी, जिसका अर्थ है 'देवताओं का द्वार') उन एमोराई बसावटों में से एक है जो उत्तरी मेसोपोटामिया और सीरिया में अक्काड़ में उभरा[1] एमोरी, एक बहुत बड़ी जनजाति का भाग थे जो कि पश्चिमी सैमाइटिक के तौर पर पहचानी जाती थी, वे प्राचीन बेबीलोनियाई साम्राज्य के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। साम्राज्य की कार्यकारी भाषा अक्केड़ियन थी और बहुत लम्बे समय तक मेसोपोटामिया की भी मुख्य भाषा बनी रही। सुमेरियन और सुमेरो-अक्केडियन सभ्यताओं की धार्मिक प्रथाओं और विशेष गुण जैसे कि कीलाक्षर (cuneiform)

[1] एमोरी सैमाइटिक (Semitic-speaking) भाषी लोग थे जिन्होंने दक्षिणी मेसोपोटामिया में 21वीं शताब्दी बी सी ई से 17वीं शताब्दी बी सी ई तक अनेक नगर-राज्य स्थापित किए और उन पर शासन किया।

लिपि एमोरियाई लोगों ने अपनाई। सार्गों (लगभग 2334 बी सी ई) और उर (लगभग 2094-2047 बी सी ई) के तीसरे वंश के राजा जैसे शक्तिशाली सुमेरियन और अक्काडियन शासकों से प्रभावित होकर बेबीलोनिया साम्राज्य ने राजतंत्र परंपरा को अपनाया।

पहले वंश के दौरान प्राचीन बेबीलोनियाई साम्राज्य बहुत महत्वपूर्ण बन गया था जिसकी स्थापना सुमु-अबुम (लगभग 1894-1881 बी सी ई) ने की थी। छठे शासक प्रसिद्ध हम्मुराबी (शासन 1792-1749 बी सी ई), के शासन काल के दौरान दक्षिण मेसोपोटामिया एकीकृत किया गया और साम्राज्य उत्तरी मेसोपोटामिया के बहुत बड़े भाग में फैल गया। उसका साम्राज्य इरीदू, उर, लागाश, ज़बलाम, लार्सा, उरुक, अदाब, ईसिन, निपुर केशी, दिलबत, बोर्सिप्पा, बेबीलोन, कीश, मैलगियम, मशकाम, शापिर, कुथा, सिपर, इशनुन्ना, मारी और तुल्तुल नगरों को अपने में सम्मिलित किए हुए था। उसके उत्तराधिकारी समसु-इलुना (लगभग 1749-1712 बी सी ई) ने और अधिक प्रदेशों जिनमें दक्षिण में ईदा-मरास, ईमुतबले, उरुक और ईसिन को मिलाकर साम्राज्य को अधिक विस्तृत किया। यद्यपि उसके शासन काल के पश्चात् साम्राज्य का पतन हो गया। बेबीलोनिया हिट्टियों (लगभग 1600 बी सी ई) द्वारा दक्षिणी मेसोपोटामिया पर आक्रमण तक महत्वपूर्ण राजनीतिक केन्द्र बना रहा, इसी कारण इस क्षेत्र को बेबीलोनिया के रूप में जाना जाता था जिसका सम्बंध प्राचीन बेबीलोनिया साम्राज्य से था।

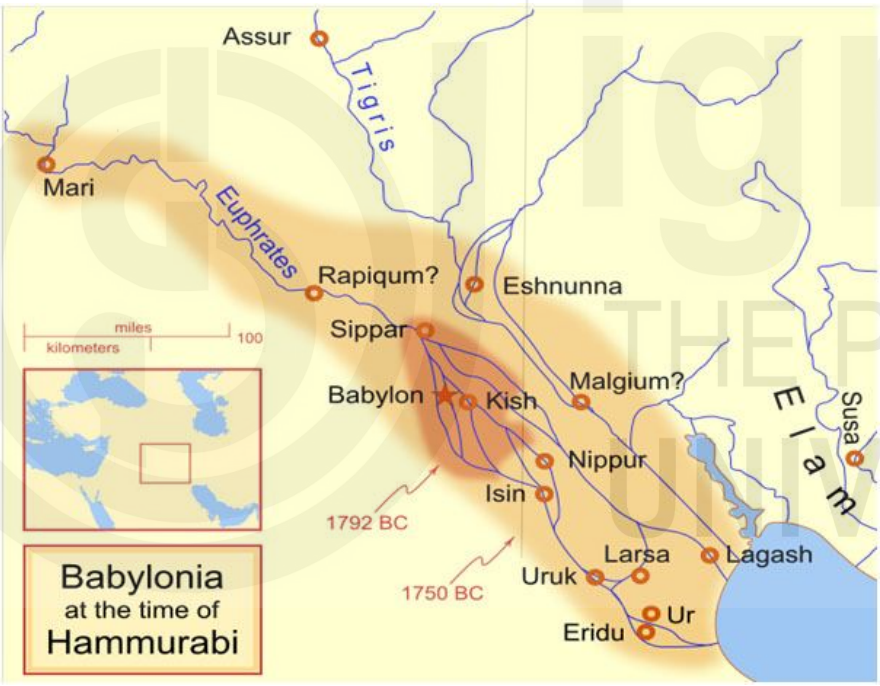

मानचित्र 12.1 : हम्मुराबी शासन काल के दौरान बेबीलोनियाई साम्राज्य की सीमा

साभारः मेप मास्टर, 2008

स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/1/12/Hammurabi%27s_Babylonia_1.svg

लगभग 1600 बी सी ई के दौरान हिट्टियों के आक्रमणों ने प्राचीन बेबीलोनिया साम्राज्य का पतन कर दिया।[2] कैसाइट्स (Kassites; अक्काडियन दस्तावेज़ों के अनुसार इन्हें कांषु के नाम से भी जाना जाता था) लोगों ने हिट्टियों के आक्रमण का लाभ उठाते हुए, ज़ाग्रोस पहाडों से उतर कर, मेसोपोटामिया में नए साम्राज्य को स्थापित किया जो कि 1595-1157 बी सी ई तक अस्तित्व में रहा। कैसाइटों ने मेसोपोटामिया की पंरपराओं को बनाए रखा और इसमें घोड़ा पालन कौशल भी जोड़ दिया। उन्होंने मेसोपोटामिया में घोड़े के प्रयोग को प्रचलित किया। दक्षिण मेसोपोटामिया में कैसाइट्स शक्तिशाली थे, उत्तर में कई समूहों का नियंत्रण था, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण लगभग 1350 बी सी ई तक मित्तानी थे।

[2] हिट्टियों का सम्बंध प्राचीन अनातोलिया से है। 15वीं शताब्दी बी सी ई में ये उत्तरी लेवांट और उत्तरी मेसोपोटामिया के शासक बन गए।

12.4 असीरियन साम्राज्य

1350 बी सी ई के दौरान पश्चिम एशिया में असीरिया का एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में आविर्भाव हुआ। असीरियाइयों द्वारा स्थापित विशाल साम्राज्य का पश्चिम एशिया के इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा और इसने 'साम्राज्यों के काल' को स्थापित किया।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, उत्तरी मेसोपोटामिया क्षेत्र में **सैमाइट** समूहों की गतिविधियां बहुत अधिक थीं।[3] कुछ समूह जो ऊपरी टाइग्रिस क्षेत्र में बस गए वे असीरियन कहलाए। यह ध्यान रखना चाहिए कि 'असीरियाइयों' ने सैमाइट और स्थानीय लोगों को मिलाकर नया मिश्रित समूह बनाया। असीरिया नाम उनके सबसे महत्वपूर्ण देवता अश-शुर के नाम से लिया गया है। आधुनिक इतिहासकार शहर को 'असुर' और इसी तरह साम्राज्य को 'असीरिया' और लोगों को 'असीरियाई' कहते हैं।

12.4.1 क्षेत्रीय विस्तार

असीरिया के उत्थान के पहले चरण में महत्वपूर्ण प्रादेशिक विस्तार देखा जा सकता है। मित्तानी शासन (लगभग 1500-1300 बी सी ई) उत्तरी मेसोपोटामिया से खत्म होने लगा, असीरियाइयों ने ऊपरी टाइग्रिस क्षेत्र में 1300 बी सी ई के दौरान नियंत्रण कर लिया और पश्चिम की ओर सीरिया की तरफ मुड़ गए जो कि शालमानेसर प्रथम (1274-1245 बी सी ई) के शासन के अधीन था। यह टिगलाथपिलेसर प्रथम (1115-1077 बी सी ई) का शासन काल था जिस समय सीरिया और बेबीलोनिया की पराधीनता और इसके साथ ही लेबनान के तट पर फीनीशियन्स से भेंट के रूप में धन प्राप्ति के कारण ही असीरिया पश्चिमी एशिया में महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरा।

हालांकि, नए-नए स्थापित हुए इस साम्राज्य को एक महत्वपूर्ण समस्या का भी सामना करना पड़ा जो कि दसवीं शताब्दी बी सी ई में जनजातियों द्वारा आक्रमण के रूप में आई, जिसका दमन इन्होंने 900 बी सी ई के आसपास किया। हालांकि, इसे अशुरनैपाल द्वितीय (883-859 बी सी ई) द्वारा स्थापित 'नए असीरियन साम्राज्य' द्वारा सुलझाया जा सका। असीरिया को उसके मूल आकार में टिगलाथपिलेसर प्रथम के काल के बराबर पुनःस्थापित करने के उद्देश्य से अशुरनैपाल द्वितीय ने सीरिया की ओर बढ़ते हुए उत्तरी मेसोपोटामिया पर अपना नियंत्रण मज़बूत किया। असुर के पास इसने नया शहर कल्हु (आधुनिक निमरुद) बनाया, जिसे उसने अपनी राजधानी बनाया। आरमेनिया, सीरिया, फिलिस्तीन और फारस की खाड़ी के आसपास के प्रदेशों में सैनिक अभियानों के बावजूद उसका उत्तराधिकारी शालमानेसर तृतीय (858-824 बी सी ई) साम्राज्य को बढ़ाने में असफल रहा। यद्यपि वह सीरिया को अपने साम्राज्य में मिलाने में असफल रहा, बेबीलोनिया ने नाम मात्र के लिए असीरियन आधिपत्य को स्वीकार कर लिया। शालमानेसर तृतीय के पश्चात् असीरिया की शक्ति कई दशकों तक पतन की ओर अग्रसर रही, लेकिन टिगलाथपिलेसर तृतीय (744-727 बी सी ई) के शासन काल में असीरिया का पुनरुत्थान हुआ।

बेबीलोनिया पर नियंत्रण को सुदृढ़ करने के साथ-साथ टिगलाथपिलेसर तृतीय ने असीरियन अधिकार क्षेत्र को, सीरिया और फिलिस्तीन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों को मिलाकर, विस्तृत किया। पूर्व की ओर भी विस्तार किया गया, टिगलाथपिलेसर तृतीय ने ज़ाग्रोस पर्वतों को पार करते हुए उस समय मेदिया नाम से पहचाने जाने वाले ईरान पर भी नियंत्रण कर लिया। टिगलाथपिलेसर तृतीय के शासन काल के दौरान असीरियन साम्राज्य का विस्तार कैस्पियन

[3] सैमाइट समूह मुख्य रूप से उन सजातीय और सांस्कृतिक समूहों को कहा जाता था जो कि सैमाइट (पश्चिम और उत्तरी अफ्रीका में बोली जाने वाली अफ्रो-एशियाई परिवार की भाषाएं) भाषाएं बोलते थे। जातीयता के आधार पर वे कॉकेशियन जाति से संबंधित थे।

सागर से लेकर भूमध्यसागर तक और ज़ाग्रोस और टॉरस पर्वतों से फारस की खाड़ी तक बढ़ गया था। असीरिया की शक्ति टिगलाथपिलेसर के उत्तराधिकारी सारगॉन द्वितीय (721-705 बी सी ई) के शासन काल में और अधिक बढ़ी। 626 बी सी ई में बेबीलोनिया में असीरियन शासन के विरूद्ध विद्रोह भड़क उठा जिससे सारगॉन के उत्तराधिकारों के शासन का विघटन होने लगा जिसका विवरण बाद में विस्तार से दिया जाएगा। 612 बी सी ई में असीरिया के महत्वपूर्ण शहर निनेवेह (निनुआ) पर बेबीलोनिया और मेदियों के संयुक्त सैन्य बल ने नियंत्रण कर लिया।

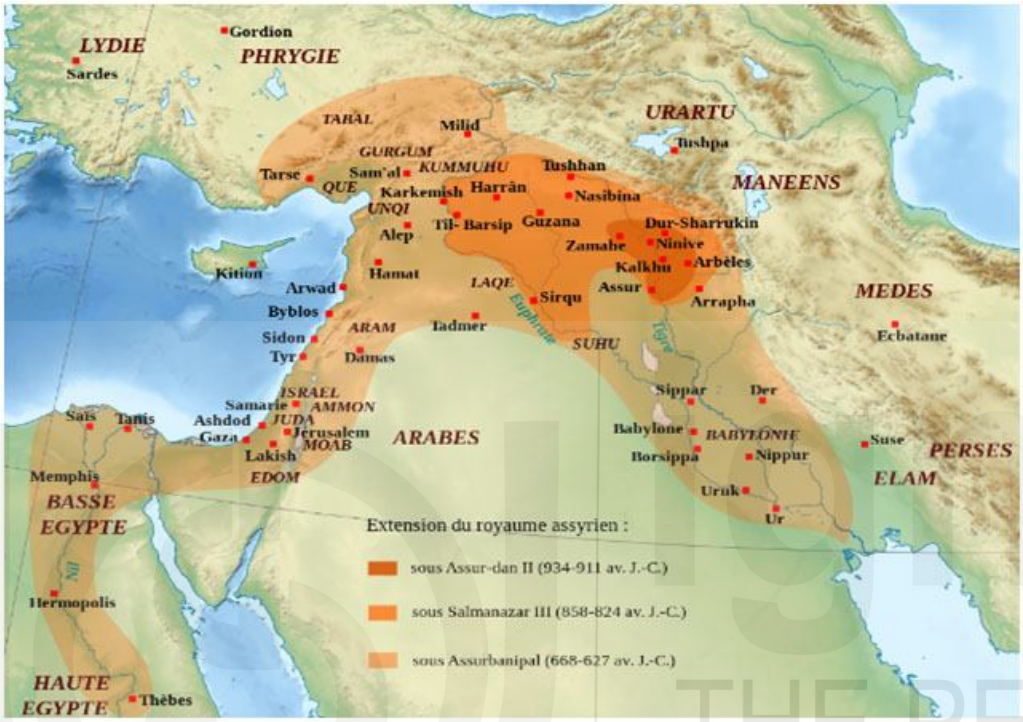

मानचित्र 12.2 : नवीन-असीरियाई साम्राज्य (934-911 बी सी ई) के विस्तार के विभिन्न चरण

साभारः सेमहर, 2010

स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/7/7c/Empire_neo_assyrien.svg

12.4.2 प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था

टिगलाथपिलेसर तृतीय ने अपने शासन काल में जिस तरह स्थिरता को संगठित किया वह उसके द्वारा कुशलता से संचालित सेना की प्रकृति और प्रशासनिक व्यवस्था के कारण ही संभव हुआ। उसने इस बात का अनुभव किया कि अगर वह कुशल शासन स्थापित करना चाहता है तो वह स्वयं अपने हाथ में पूरी शक्ति केन्द्रित नहीं रख सकता। अतः उसने अपने प्रांतों को राज्यपालों के अधीन प्रशासनिक इकाइयों में बांटकर साम्राज्यीय शक्ति को मज़बूत करने का प्रयास किया। इन राज्यपालों को अपने प्रशासनिक क्षेत्र में आर्थिक, प्रशासनिक, न्यायिक और सैन्य शक्तियां प्राप्त थीं और ये प्रत्यक्ष रूप से राजा के प्रति उत्तरदायी थे। लेकिन वे निरंकुश शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकते थे क्योंकि सभी मामलों पर राजा की सत्ता तथा निर्णय अंतिम होता था। साथ ही इन्हें ये अधिकार और शक्तियां राजा के नाम पर ही दी गई थीं। इन क्षेत्रों से प्राप्त भेंटों से राज्य के राजस्व में भारी वृद्धि होती थी। असीरियाई सेना की टुकड़ियों की भर्तियां भी इन्हीं क्षेत्रों से की गई थीं जिनका वर्णन विस्तार से नीचे किया जाएगा।

सैन्य टुकड़ियों के लिए मेसोपोटामिया के बड़े भूस्वामियों पर निर्भरता से हट कर टिगलाथपिलेसर तृतीय के शासन काल में स्थाई सेना का निर्माण किया गया। जबरन गरीब किसानों को सेना

में भर्ती करने की बजाय टिगलाथपिलेसर तृतीय को यह अनुभव हुआ कि उसे अपने विशाल साम्राज्य को नियंत्रण में रखने के लिए एक प्रशिक्षित सेना की आवश्यकता है जो समय पर उसकी सुरक्षा कर सके। राज्यपालों को अपने क्षेत्रों में सैन्य दस्ते भर्ती कर मुख्य सेना के लिए उपलब्ध कराना होता था। इस तरह सेना में विविध प्रकार की विशिष्ट इकाइयां बन गई थीं। उदाहरण के लिए, पैदल सेना अनातोलिया और सीरिया-फिलिस्तीन से आई, जबकि ऊंट सवार अरब से आए। इसने असीरिया की सेना की दक्षता में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि की।

इस स्थाई सेना ने सुनिश्चित किया कि टिगलाथपिलेसर तृतीय उत्तरी ईरान के मेदिया प्रांत में अपने अधिकार क्षेत्र को विस्तृत करने में सफल हो सका। असल में इस विस्तृत सेना के पालन-पोषण और इसे बनाए रखने के लिए लगातार जीत और लूटपाट की आवश्यकता थी जिसे वे इन आक्रमणों के द्वारा प्राप्त करते थे। यह भी ध्यान रखने योग्य है कि चूंकि सेना में अश्वरोही सेना और रथों को सम्मिलित किया जाने लगा तो घोड़ों की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने के लिए उत्तरी ईरान के पर्वतीय चारागाह, जो घोड़ा-पालन में निपुण थे, को साम्राज्य में मिला लिया गया।

इसके अलावा, संघर्ष और विद्रोह को दबाने के लिए किए गए प्रयासों के तहत टिगलाथपिलेसर तृतीय ने एक नीति अपनाई जिसके अनुसार जनसंख्या को विजित क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित किया गया। यह विशेषकर उन क्षेत्रों में किया गया जहां कब्ज़े के दौरान बहुत उग्र संघर्ष चला था। उदाहरण के लिए, 744 बी सी ई में ईरान में लगभग 65,000 लोग सैनिक अभियान के अंत में स्थानांतरित किए गए। असीरियाई साम्राज्य के विरूद्ध लोगों में जो नफरत की भावना थी उसकी झलक बाइबल के पुराने संस्करण (Old Testament) में देखने को मिलती है। यह तरीके चाहे जितने भी कठोर थे लेकिन यह दर्शाता है कि इनसे टिगलाथपिलेसर तृतीय और उसके सरगोनिद उत्तराधिकारियों ने इस साम्राज्य को आगे बढ़ाया और इसने अन्य साम्राज्यों को प्रतिमान के रूप में अपनाने के लिए एक रूपरेखा उपलब्ध कराई।

बोध प्रश्न-1

1) असीरियन साम्राज्य ने स्वयं को किस तरह विस्तृत और व्यवस्थित किया?

.....

.....

.....

.....

.....

2) हम्मुराबी और उसके उत्तराधिकारियों के काल में साम्राज्यों के अस्तित्व की प्रकृति का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) अशुरनीपाल द्वितीय ने किन समस्याओं का सामना किया तथा उनसे निपटने के लिए उसने क्या किया?

.....

.....

.....

.....

.....

4) साम्राज्य को मज़बूत करने में एक अच्छी सेना किस तरह सहायता करती है?

.....

.....

.....

.....

.....

12.5 असीरिया का विभाजन और बेबीलोनिया के साथ संघर्ष

जैसा कि पहले विवरण दिया गया है कि टिगलाथपिलेसर तृतीय के शासन काल के दौरान असीरिया ने बेबीलोनिया पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था, और इस समय यहाँ कलडीन (Chaldean) जनजाति बस चुकी थी।[4] इन जनजातियों ने सहयोगी इलम[5] कबीलों के साथ मिलकर असीरिया के विरूद्ध संघर्ष किया। बेबीलोनिया ने 692 बी सी ई में असीरिया के विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया जिसमें किसी की भी जीत नहीं हुई। 690 बी सी ई में असीरियाई शासक सेन्नाचेरिब (704-681 बी सी ई) ने बेबीलोनिया को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। इसका इतना गहरा प्रभाव हुआ कि विनाश के कारण वहां अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई और चीज़ों की कीमतें पच्चहतर गुना तक बढ़ गई थीं। इस संघर्ष का अंत एक साल बाद बेबीलोनिया के आत्मसमर्पण के साथ हुआ। बेबीलोनिया के लोगों को इस युद्ध में बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी, क्योंकि उनके शहर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया और इसके अपने स्वतंत्र साम्राज्य का अंत हो गया और यह स्थायी प्रांत के रूप में असीरियन साम्राज्य में मिला लिया गया।

सेन्नाचेरिब के पुत्र एसारहद्दोन, जो 681 बी सी ई में सत्ता में आया, ने बेबीलोनिया को फिर से बसाने का आदेश दिया और उसके मौजूदा बचे हुए शेष आवासियों को वापस बुलाया। 672 बी सी ई में अपनी मृत्यु से पहले ही, एसारहद्दोन ने असीरियन साम्राज्य को अपने पुत्रों में विभाजित कर दिया। बड़े पुत्र अशुरबनीपाल को असीरिया मिला, जबकि उसके छोटे पुत्र शमास-शुम-उकीन को राजकुमार के अधिकारों के साथ बेबीलोनिया मिला, लेकिन फिर भी वह स्वतंत्र शासक नहीं था और अधिकतर नियंत्रण उसके बड़े भाई के हाथ में था। 652 बी सी ई में शमास-शुम-उकीन ने मिस्र, सीरिया के कुछ राज्यों और इलम के साथ गुप्त संधि कर असीरिया पर अपनी सैन्य टुकड़ियों के साथ चढ़ाई कर दी। हालांकि, अशुरबनीपाल इलम को संधि में से कूटनीति और पैलेस क्रांति द्वारा हटाने में सफल रहा। बचे हुए सहयोगी बेबीलोनिया को आवश्यक समर्थन देने योग्य नहीं रहे और असीरिया के बेबीलोनिया पर तीन साल तक लगातार हमलों के कारण 648 बी सी ई में बेबीलोनिया की पराजय हो गई। इसके साथ ही इसका शासक शमास-शुम-उकीन भी युद्ध के मैदान में मारा गया। 646 बी सी ई में अशुरबनीपाल इलम को भी हराने में सफल हुआ और उसने इसकी राजधानी सूसा को अपने नियंत्रण में कर लिया।

[4] कलडीन वह जनजाति है जो दसवीं शताब्दी बी सी ई के आरंभ में बेबीलोनिया क्षेत्र में आकर बसी और ये असीरियनों के विरूद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल हो गए।

[5] कलडीन कबीलों के पारंपरिक मित्र, जिन्होनें यह सुनिश्चित किया कि इन्हें कलडीन और असीरियों के विरूद्ध संघर्ष में हर बार भागीदार बनाया गया।

असीरिया के विरूद्ध बेबीलोनिया का अगला विरोध 626 बी सी ई में कलडीन के शासक, नेबोपोलेसर (658-605 बी सी ई) द्वारा किया गया। वह इलम और बेबीलोनिया की सेना को फिर से संयुक्त कर वापस लाने में सफल रहा। फिर भी बेबीलोनिया को अंततः असीरिया से मुक्त होने में दस साल लगे। मादों (Medes) ने 614 बी सी ई में असीरिया की पुरानी राजधानी असुर पर कब्जा करके बेबीलोनिया की सहायता की। इसके साथ ही नेबोपोलेसर के पुत्र नेबुचाडनेज़्जा का विवाह माद शासक स्याक्ज़ार्स की पुत्री अमिटिस से कर मैत्री-संधि पर मुहर लगाई। 612 बी सी ई में निनेवेह शहर पर मादों और बेबीलोनिया की संयुक्त सेना ने कब्जा कर लिया। हालांकि कुछ असीरियन सैन्य टुकड़ियां इसकी प्रगति रोक पाईं और उन्होंने ऊपरी मेसोपोटामिया पर नियंत्रण बनाए रखा, लेकिन 609 बी सी ई में बेबीलोनिया इन्हें पूरी तरह से हटाने में सफल रहा और अपनी स्थिति को फीनीशिया, सीरिया और फिलिस्तीन में मज़बूत किया। इसी समय, मिस्र का शासक नेको द्वितीय (610-595 बी सी ई) इस प्रदेश में सत्ता की होड़ में था। परिणामस्वरूप पश्चिमी एशिया तीन मुख्य शक्तिशाली ताकतों, मादों (Medes), बेबीलोनिया और मिस्र के नियंत्रण में आ गया। 605 बी सी ई में मिस्र और बेबीलोन, सीरिया और फिलिस्तीन के मध्य घमासान युद्ध हुए। बाद में फीनीशिया के कुछ शहरों ने खुद को विजयी बेबीलोनिया को समर्पित कर दिया। 605 बी सी ई में नेबोपोलेसर की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र नेबुचाडनेज़्ज़ार द्वितीय (605-526 बी सी ई) को सत्ता प्राप्त हुई। 597 बी सी ई में नेबुचाडनेज़्ज़ार ने यहूदियों की राजधानी जेरूसलम पर कब्जा कर लिया और वहां के शासक को विस्थापित कर दिया। बाद में उसने मिस्र के फिरौन एप्राइस के साथ युद्ध किया, जिसने जेरूसलम के शासक को बेबीलोनिया के विरूद्ध विद्रोह करने के लिए भड़काया था। विरोध को दबाने के बाद नेबुचाडनेज़्ज़ार द्वितीय ने जेरूसलम पर फिर से कब्जा कर लिया और वहां के शासक और बहुत से कारीगरों को बेबीलोनिया में निर्वासित कर दिया। नेबुचाडनेज़्ज़ार द्वितीय की 526 बी सी ई में मृत्यु के बाद अगले बारह वर्षों में तीन शासक गद्दी पर बैठे। 556 बी सी ई में यह नेबोनिदस के हाथों में आया जिसने धार्मिक सुधार किये और चंद्र-देवता सिन को महत्व दिया। यह संभव है कि ये धार्मिक विश्वास आरमीनियाई थे और इसे महत्व देने के पीछे उसका उद्देश आरमीनिया जनजातियों को अपने साथ एकीकृत करने की चेष्टा थी। हालांकि बेबीलोनिया के पुरोहित वर्ग ने इसे पसंद नही किया। नेबोनिदस मिस्र की ओर जाने वाले कारवां मार्ग पर कब्जा करने में सफल रहा जो तेईमा के मरूस्थान से होकर गुज़रता था। वह अपने पुत्र बेलशज़्ज़ार को बेबीलोनिया में छोड़ कर स्वयं तेईमा चला गया। बेबीलोनिया की पूर्वी सीमा पर जल्दी ही ईरान के शासक सायरस द्वितीय (लगभग 600-530 बी सी ई) का खतरा मंडराने लगा। तेईमा में दस वर्ष बिताने के बाद नेबोनिदस बेबीलोनिया की सुरक्षा के लिए वापस लौटा। लेकिन अंततः, 539 बी सी ई में बेबीलोनिया ईरान से हार गया और हमेशा के लिए अपनी स्वतंत्रता गवां बैठा।

12.6 समाज और अर्थव्यवस्था

मेसोपोटामिया में क्षेत्र विशेष की राजनैतिक सत्ता के आधार पर सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृति वातावरण में महत्वपूर्ण बदलाव आए।

12.6.1 सामाजिक-आर्थिक विशेषताएं

असीरिया और बेबीलोनिया के साम्राज्यों में सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं का विश्लेषण करने के लिए वहां के लोगों और समाज के ढांचे को समझने की आवश्यकता है। ये कारक बताते हैं कि वहां के व्यापार के तरीके कैसे थे? भूमि किस तरह विभाजित थी? तथा वह सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को निर्धारित करता था।

मेसोपोटामिया में पहली सहस्राब्दि बी सी ई के दौरान आर्थिक केन्द्र शाही संपत्ति से हटकर

मंदिर और निजी संपत्ति की ओर परिवर्तित हो गया। अर्थव्यवस्था कृषि उत्पादन पर निर्भर थी। उच्च श्रेणी की भूमि मंदिर, शाही परिवार और धनी लोगों के पास थी। छोटे कृषकों की पहुंच विशाल भूखंडों तक नहीं थी इसलिए वे बाज़ार कृषि के लिए अपनी भूमि का प्रयोग करते थे क्योंकि भूमि बहुत मंहगी थी। सिंचाई के द्वारा ही कृषि संभव थी। भूमि की सिचांई नहरों द्वारा की जाती थी। इन नहरों के स्वामी राज्य और मंदिर थे, इनके पानी को प्राप्त करने के लिए शुल्क देना होता था। छोटे भूस्वामी अपनी भूमि अपने परिवार की सहायता से जोतते थे, जबकि बड़े भूस्वामी अपनी भूमि पट्टे पर देते थे।

व्यापार के संदर्भ में बेबीलोनिया फिलिस्तीन, फीनीशिया और मेसोपोटामिया के दक्षिण तथा पूर्व के देशों मध्य में स्थित था। मिस्र, एलम, सीरिया और अनातोलिया के साथ टिन, तांबा, लोहा, शराब तथा लकड़ी, आदि, वस्तुओं का महत्वपूर्ण व्यापार होता था। पड़ोसी क्षेत्रों में बेबीलोनिया के ऊनी वस्तुओं की विशेष मांग थी। बड़े व्यापारिक परिवारों जैसे ऐजिबी, जिनका मुख्यालय बेबीलोन में था, ने स्थानीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विभिन्न बैंकिंग तथा वित्तीय गतिविधियों द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बुनकर, लोहार, बढ़ई, आदि शिल्पी अपने उत्पादों को बाज़ार में बेचने के अतिरिक्त एक निश्चित कीमत पर अपने माल की आपूर्ति करने के ठेके लेने में सफल हुए।

उस समय समाज में तीन प्रकार के नागरिक थे। वे जिन्हें पूर्ण अधिकार प्राप्त थे, वे जो निर्भर या अर्ध-स्वतंत्र थे और अंतिम वे जो दास थे। जो नागरिक पूर्ण स्वतंत्र थे वे नगर की सभाओं के सदस्य थे और विवादों के समाधान में सहायता करते थे। ये लोग मंदिर के धार्मिक क्रियाकलापों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेते थे और इनका मंदिर के राजस्व में हिस्सा भी निर्धारित था। पुजारियों, राज्य अधिकारियों, बड़ें भूस्वामियों, स्वतंत्र कारीगरों और लेखकों के कानूनी अधिकार सुरक्षित और वंशानुगत थे। उन पर निर्भर आबादी पीढ़ी दर पीढ़ी राज्य, निजी भूस्वामियों और मंदिर की भूमि पर कार्य करती थी। ये व्यक्ति दास नहीं थे और न ही इन्हें बेचा जा सकता था। कृषि का विकास इन स्वतंत्र कृषकों और पट्टे पर भूमि जोतने वालों पर निर्भर था जो भूमि पर कार्य करते थे। यहां तक कि शिल्प उत्पादन भी प्रमुख रूप से इन्हीं स्वतंत्र कृषकों द्वारा किया जाता था। दोनों ही के संदर्भ में यह पाया गया कि ये सभी व्यवसाय आनुवांशिक थे।

स्रोतों की कमी के कारण हमें असीरियाई समाज और अर्थव्यवस्था के बारे में बहुत कम जानकारी है। लेकिन उत्पादन का मुख्य रूप कृषि था, हालांकि छोटे स्तर पर औद्योगिक उत्पादन भी फला-फूला। भूमि मुख्यतः राजकीय भूमि, मंदिर भूमि और अभिजात्य वर्ग के नियंत्रण में थी। असीरियाई विस्तार के कारण उनकी पहुंच लेबनान, अमानूस और पूर्वी अनातोलिया के खनिज स्रोतों तक हो गई। व्यापार भी फला-फूला जिसमें राजकीय तथा निजी व्यापारी दोनों की बराबर सहभागिता थी। विदेशी व्यापार ज़्यादातर विदेशी वस्तुओं जैसे लिनन, कीमती पत्थर, हाथीदांत और रंजक में होता था।

असीरियाई समाज स्वतंत्र व्यक्तियों और दासों में विभाजित था। दास आमतौर पर युद्ध बन्दियों में से बनाए जाते थे और उन्हें बड़े पैमाने पर निर्माण-कार्यों में लगाया जाता था।

12.6.2 सांस्कृतिक विशेषताएं

उस समय मेसोपोटामिया अपनी लेखन-कला के योगदान के कारण जाना जाता था और बाद में पुस्तकालयों के विकास के लिए। प्रधानतः लेखन मिट्टी पर किया जाता था। असीरियन और बेबीलोनिया ने पहली सहस्राब्दि बी सी ई में खाल का प्रयोग और पपायरस (जिससे कागज बनाया जाता था) का आयात आरंभ किया था। इसी समय इन्होंने मोम की पतली परत से ढके हुए तख्तों का प्रयोग किया जिस पर कीलाक्षर (cuneiform) लिपि अंकित की गई।

मेसोपोटामिया की प्रभावित करने वाली सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि उन्होंने किस तरह इतनी संख्या में पुस्तकालय स्थापित किए, विशेषकर जो निनेवेह में अशरबनीपाल के महल में स्थित है। मेसोपोटामिया में लेखकों ने या तो मिट्टी में लिखी पुस्तकों की प्रतिलिपि बनाई थी या फिर ये पुस्तकें इन्होंने स्वयं एकत्र की थीं। पुस्तकालय की 30,000 पट्टालिकाओं (tablets) में दरबार वृतांत, महत्वपूर्ण घटनाओं के विवरण, साहित्यक और वैज्ञानिक कार्यों के विवरण हैं।

महत्वपूर्ण रूप से, अशरबनीपाल का पुस्तकालय ऐसा पहला पुस्तकालय था जो विशेष क्रम में संतुलित रूप से व्यवस्थित था। लम्बे अवतरणों ने अधिक जगह घेरी थी क्योंकि कुछ अवतरण तो चालीस से सौ पट्टिकाओं जितने लम्बे थे। सूचीपत्र बनाने में ध्यान दिया गया था और यह सुनिश्चित किया जाता था कि ये आसानी से प्राप्त हो जाएं और इन्हें आवश्यकतानुसार बदला जा सके। हर पट्टिका पर 'पृष्ठ संख्या' अंकित थी और पुस्तक का शीर्षक पट्टिका के आरंभ के कुछ शब्दों से निर्धारित किया जा सकता था। साहित्यक लेखों में कुछ ऐसा लिखा होता था जो कि पुस्तक के पहले पृष्ठ सदृश्य हो, जिसमें पुस्तक के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया होता था। पुस्तक को ढूंढने के लिए उनमें धागे के साथ एक शीर्षक लगा होता था जिसमें पुस्तक का नाम, वह किस श्रृंखला से सम्बंधित है और उसमें प्रयोग हुई कुल पट्टिकाओं की संख्या लिखी होती थी। यह पट्टिकाएं वास्तव में एक प्रकार का सूचीपत्र (catalogue) थीं।

सैन्य टुकड़ियों द्वारा विदेशी धरती की ओर की गई यात्राओं का इतिहास, विशेषकर कलात्मक शैली में लिखे लयबद्ध गद्य उल्लेखनीय हैं। असीरियन रचनाओं में सबसे महत्वपूर्ण है राजा अहिक़र के एक बुद्धिमान लेखक और सलाहकार की कहानी जो कि यूनानी, आरमेनियन और सीरियन तथा अन्य भाषाओं में अनुवादित की गई। इस रचना का सबसे विस्तृत रूप आरमीनियाई संस्करण है।

बेबीलोनिया का सबसे महत्वपूर्ण योगदान हम्मुराबी की 'न्याय संहिता' है। हम्मुराबी ने इससे कई प्रगतिशील सुधार किए जो अधिक मानवीय थे। उसने पुराने 'एक आँख के बदले आँख' जैसे विचार हटा दिए। उसने पुरानी संहिताओं 'उरुकागिना', 'उर-नम्मू', तथा 'लिपित-इशतर' से विचार ग्रहण किए। साथ ही उसने प्रचलित 'धन द्वारा क्षति पूर्ति' की व्यवस्था में भी परिवर्तन किया।

बेबीलोनिया वासियों की खगोलशास्त्र में अत्यधिक रुचि थी और उन्होंने सूरज, चन्द्रमा, विभिन्न नक्षत्रों और ग्रहों के प्रयोगसिद्ध आंकड़ों और जानकारी को एकत्रित किया था। इन खगोलविद्ों ने चन्द्रमा से सम्बंधित खगोलीय तत्वों के संचरण को देखा और उन खगोलीय तत्वों के संचरण, जो नग्न आंखों से देखे जा सकते थे, को मानचित्रों पर चिन्हित किया। इन अनुभवों ने समय के साथ बेबीलोनिया में गणितीय खगोलशास्त्र का विकास किया। पांचवी शताब्दी बी सी ई के महान् खगोलविद् नेबुरियानस और किदिन्नु ने इस क्षेत्र में रचनात्मक योगदान दिया। इन्होंने चन्द्रमा के घटने-बढ़ने की दशा और सौर वर्ष की लम्बाई के सम्बंध में ज्ञान विकसित किया।

आठवीं और सातवी शताब्दियों में कला के क्षेत्र में मेसोपोटामिया ने असीरियन नक्काशी वाली मूर्तिकला की रचना के क्षेत्रों में विशिष्ट रूप से प्रगति की। इनमें शहरों पर कब्जा, शत्रु की भूमि पर चढ़ाई और शिकार के दृश्य अंकित हैं। कलाकार स्थिर चित्रों, लोगों, और जानवरों की रचना से हटकर प्राकृतिक दृश्यों के चित्र बनाने लगे थे। असीरियन निपुण धातु-कार्मिक थे। उन्होंने कांसे की अलंकृत उकेरी हुई पट्टिकाएं भी बनाई थीं। मेसोपोटामिया अपने मंदिर **ज़िगरैटों (ziggurat)** के लिए भी बहुत प्रसिद्ध था। बाइबल में बेबल के बुर्ज के नाम से जाना जाने वाले ज़िगरैट के संदर्भ में कहा जाता है कि यह सात मंज़िला ज़िगरैट नेबूकदनेज़्ज़ा द्वारा

बनाया गया था। ऐसा माना जाता है कि बेबीलोनिया का प्रसिद्ध हैंगिंग गार्डन भी इसी के द्वारा बनवाया गया था जो कि प्राचीन विश्व के अजूबों में से एक माना जाता है।

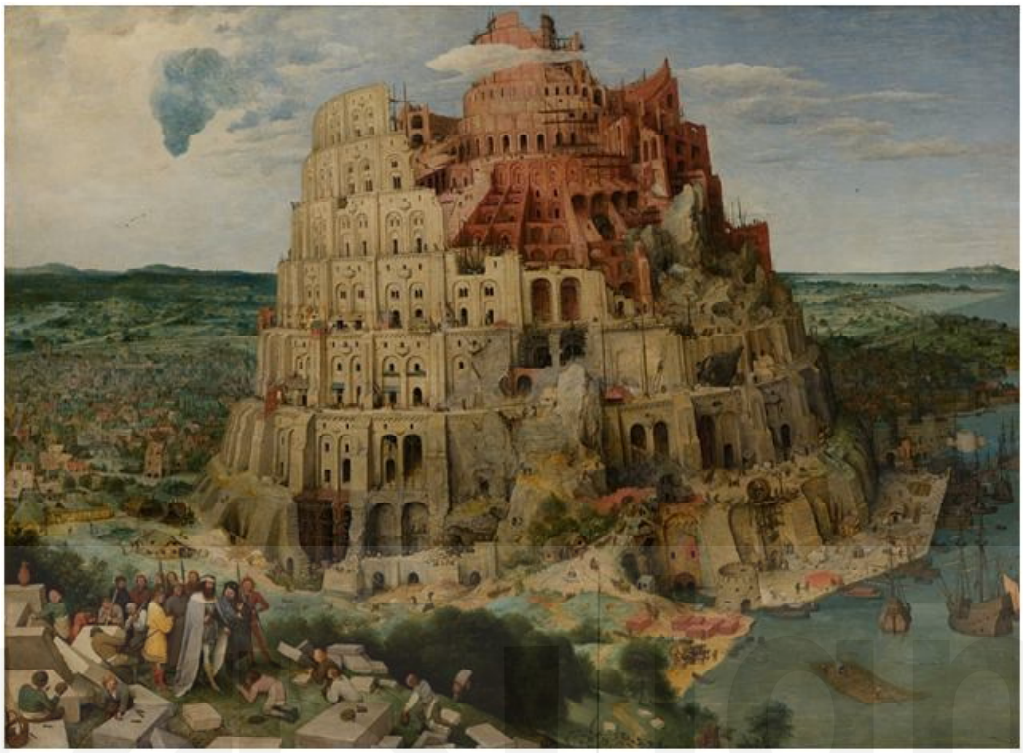

चित्र 12.1: बेबल टॉवर का चित्र
साभारः पीटर ब्रुगेल द एल्डर, 1563
स्रोतःhttps://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/5/50/Pieter_Bruegel_the_Elder_-_The_Tower_of_Babel_%28Vienna%29_-_Google_Art_Project.jpg

चित्र 12.2: बेबीलोनिया के हैंगिंग गार्डन का चित्र
साभारः मार्टिन वेन हीमर्स्कक (1498-1574)
स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/a/ae/Hanging_Gardens_of_Babylon.jpg

शिल्प उत्पादन के क्षेत्र में फिनिशिया के शहर कांच के काम के लिए जाने जाते थे जो कि निर्यात करने के लिए बनाया जाता था। इसके साथ ही यहां का जामनी रंग में रंगी हुई ऊन

और लिनन का कपड़ा बहुत प्रसिद्ध था। पहली सहस्राब्दि बी सी ई के मध्य तक दक्षिणी अरब मसालों और रत्नों के व्यापार में भी शामिल हो गया जो कि भारत और सोमाली तट से आते थे।

बोध प्रश्न-2

1) असीरियन साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे?

.....

.....

.....

.....

.....

2) अर्थव्यवस्था में राजस्व का मुख्य स्रोत क्या था? अर्थव्यवस्था के प्राथमिक सहभागी कौन थे?

.....

.....

.....

.....

.....

3) असीरियन ग्रंथों तथा उनके रखरखाव का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) व्यापार की मुख्य वस्तुएं क्या थीं? वे सभी कहां पहुंचाई जाती थीं?

.....

.....

.....

.....

12.7 सारांश

इस इकाई में हमने साम्राज्यों के गठन पर विचार किया है – कैसे उनका विकास हुआ, कैसे वह बने रहे और फिर कैसे उनका पतन हुआ। हर एक साम्राज्य की कहानी पृथक है। यहां हमने जनजातियों के आवागमन से क्षेत्रीय विस्तार होने की प्रकिया को समझा। एक बार भू-क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लेने के बाद उसे नियंत्रण में बनाए रखने के लिए स्थानीय आबादी से सेना के रखरखाव के लिए शुल्क एकत्रित किया जाता था। सेना की प्रकृति के अध्ययन से

साम्राज्य की स्थिरता का ज्ञान होता है। एक स्थिर साम्राज्य के स्थायित्व के लिए स्थायी सेना के रखरखाव करने की आवश्यकता थी क्योंकि इससे वह अन्य क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करके आर्थिक संसाधनों को व्यापार और अन्य आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने में सफल हो सकता था। एक स्थिर साम्राज्य के दायरे में रहकर ही शासक कला, वास्तुकला के विकास, और व्यापार और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति महत्वपूर्ण समय और ऊर्जा का निवेश कर सकते थे।

12.8 शब्दावली

पपायरस : लंबे पौधे जैसी घास जिससे एक प्रकार का कागज़ बनाया जाता है जिसका इस्तेमाल ख़ासतौर पर प्राचीन मिस्र के लोग किया करते थे।

सैमेटिक : अरब और मध्य पूर्व के यहूदियों से संबंधित

ज़िगरैट : मेसोपोटामिया के मुख्य शहरों में पाये जाने वाले पिरामिडीय आकार के सीढ़ीदार मंदिर टावर

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 12.4 देखें
2) उत्तर में हम्मुरब्बी द्वारा साम्राज्य-विस्तार और समेकन पर चर्चा सम्मिलित होनी चाहिए। भाग 12.3 देखें
3) उप-भाग 12.4.1 देखें
4) उप-भाग 12.4.2 देखें

बोध प्रश्न-2

1) आन्तरिक विवाद, ईरान (Persia) के उदय पर चर्चा कीजिये। भाग 12.5 देखें
2) कृषि, छोटे भूमि धारकों पर चर्चा कीजिये। उप-भाग 12.6.1 देखें
3) उप-भाग 12.6.2 देखें
4) उत्तर में कांच, धातुओं आदि पर चर्चा सम्मिलित होनी चाहिए। उप-भाग 12.6.1 देखें

12.10 संदर्भ ग्रंथ

हरमन, जोआचिम एवं एरिक जुरचर (संपा.). 1996. *हिस्टी ऑफ ह्युमैनिटी: साइन्टिफ़िक ऐंड कलचरल डिवेलॅप्मेन्ट, फ्रॉम द सेवन्थ सेन्चुरी टू द सेवन्थ ए. डी.* भाग 3. पाठ 7. न्यूयार्क: यूनेस्को. रूटलेज.

क्रिवाक्ज़ेक, पॉल. 2014. *बेबीलोनः मेसोपोटामिया एंड द बर्थ ऑफ सिविलाइजेशन* ग्रेट ब्रिटेनः अटलांटिक बुक्स.

मैकनील, डोनाल्ड जी. 1967. 'द कोड ऑफ हम्मुरब्बी', *अमेरिकन बार एसोसिऐशन जर्नल* 53 (5): 444-446.

पिन्चेस, थियोफिलस जी. 1917. 'द लेंग्वेज ऑफ द कस्साइट्स". *द जर्नल ऑफ द रॉयल एशिआटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड.* 101-114.

राडनर, केरन. 2015. *एन्शैन्ट असीरिया: ए वेरी शॉर्ट इन्ट्रोडक्शन.* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

रेगोज़िन, जेनाएड ऐलेक्सहवना. 1894. *द स्टोरी ऑफ असीरिया: फ्रॉम द राईज़ ऑफ द इम्पायर टू द फ़ॉल ऑफ निनेवेह.* न्यूयार्क: टी. फिशर अनविन.

केम्ब्रिज इंगलिश डिक्शनरी http://dictionary.cambridge.org (http://www.britannica.com)

पी डी एफ:

'द रिलिजन ऑफ द कस्साइटस'. 1885. *द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस जर्नल.* भाग-1 (3).

https://www.jstor.org/stable/pdf/527374.pdf?refreqid=search

12.11 शैक्षणिक वीडियो

असीरियन एम्पायर
https://www.youtube.com/watch?v=UZhEcoBPO1k

द पावर ऑफ बेबीलोन
https://www.youtube.com/watch?v=HpHIw-NPGJI&t=628s